कैम्पस कनेक्ट

(सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु का समाचार बुलेटिन)

सितम्बर, 2025 वर्ष : 1, अंक : 2

प्रेरणा–स्रोत :

श्रीमती आनन्दीबेन पटेल
माननीया कुलाधिपति एवं
श्री राज्यपाल, उ. प्र.

श्री योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमन्त्री, उ. प्र.

संरक्षक :

प्रो. कविता शाह
कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

परामर्श–मण्डल :

प्रो. दीपक बाबू
प्रो. सौरभ
प्रो. प्रकृति राय
प्रो. नीता यादव
श्री दीनानाथ यादव (कुलसचिव)

सम्पादक :

प्रो. हरीशकुमार शर्मा

सह–सम्पादक :

डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

सम्पादक–मण्डल :

डॉ. शिवम शुक्ल
डॉ. रेनू त्रिपाठी
डॉ. अनुज कुमार
डॉ. सत्यम मिश्र

वित्त–प्रबन्धन

श्री रमेन्द्र कुमार मौर्य (वित्ताधिकारी)

तकनीकी सहयोग एव डिजाइनिंग :

श्री दिव्यांशु कुमार

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक :

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश–272202
ईमेल :
camus.connect@suksn.edu.in
वेबसाइट : www.suksn.edu.in
(सम्पादन–प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यावसायिक)

नोट :*रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।*

''विश्वविद्यालयी प्रशिक्षण का मूल्य सूचना–संग्रहण में नहीं है, जैसा कि वैज्ञानिक प्रवृत्तियों ने विकसित किया है। विद्यार्थी को ज्ञान से विचार को तथा सिद्धान्त से तथ्य को अलग करना सीखना चाहिए तथा साक्ष्य को तोलने, तर्क प्रस्तुत करने तथा प्रतिपक्षी के विचारों को निष्पक्षता से जाँचने के योग्य बनना चाहिए। शोध की आत्मा इसके सिवा कुछ नहीं है कि स्वतन्त्र परीक्षण तथा विवेकपूर्ण चिन्तन के दृष्टिकोण को जारी रखा जाये।''

– – – – –

''यदि भारत को अपने समय की उलझनों का सामना करना है तो उसे अपने निर्देशन के लिये उनकी ओर नहीं देखना चाहिए, जो मात्र बीतते समय की अपेक्षाओं में खो गये हैं, बल्कि उसे देश के अनुभवी और विद्वान व्यक्तियों, कवियों, कलाकारों, शोधार्थियों तथा अन्वेषकों की ओर मुड़ना चाहिए। सभ्यता के ये बौद्धिक पथ–प्रदर्शक विश्वविद्यालयों में ही प्राप्त तथा प्रशिक्षित किये जा सकते हैं क्योंकि वे ही राष्ट्र के आन्तरिक जीवन के अभयारण्य हैं।''

(साहित्य अकादमी, दिल्ली से प्रकाशित प्रमा नन्दकुमार की पुस्तक 'सर्वपल्ली राधाकृष्णन' से साभार)

''अगर स्वराज अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों का और उन्हीं के लिये होने वाला है तो बेशक अंग्रेजी ही राष्ट्रभाषा होगी। लेकिन अगर स्वराज करोड़ों भूखों मरने वालों, करोड़ों निरक्षर भाई–बहिनों और दलितों व अन्त्यजों का हो और इन सबके लिये होने वाला हो, तो हिन्दी ही एकमात्र राष्ट्रभाषा हो सकती है।''

–महात्मा गांधी

''...मान लीजिए हमने पिछले पचास वर्षों में अपनी–अपनी भाषाओं में शिक्षा पायी होती; तो आज हम किस स्थिति में होते? तो आज भारत स्वतन्त्र होता; तब हमारे पढ़े–लिखे लोग अपने ही देश में विदेशियों की तरह अजनबी न होते बल्कि देश के हृदय को छूने वाली वाणी बोलते; वे गरीब–से–गरीब के बीच काम करते और पचास वर्षों की उनकी उपलब्धि पूरे देश की विरासत होती।''

–महात्मा गांधी

(दिनांक 4 फरवरी, 1916 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में)

''मुझे अपनी भाषा पर गर्व है, पर हिन्दी में काम होने पर बड़ी तृप्ति मिलती है। मुझे लगता है हमने देश के लिये कुछ किया है। कुछ बातें तेलगू में कहता हूँ, पर हिन्दी में कहने पर ज्यादा लोग

विश्वविद्यालय कुलगीत

आत्मदीप प्रकाश पावन परम् विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही सिद्धार्थ जिसका नाम।
बुद्ध की करुणा अहिंसा प्रेम का उपहार,
उमड़ता रहता अहर्निश शान्ति–पारावार,
ज्ञान का आलोक मानव का परम सन्देश,
नित्य प्रज्ञा प्रीति गुरुओं का नवल निवेश।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

परम पावन परम निर्मल पुण्य भूमि प्रकाश,
ज्ञान का आनन्द का आलोक का आकाश,
महा करुणा से अलंकृत कपिलवस्तु महान,
अमरता की चिर तृषा का लोक मंगल गान।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

नमन इसको इस धरा को कोटि कोटि प्रणाम,
यह नहीं बस एक संस्था तीर्थ अमृत धाम,
महाप्रज्ञा महाकरुणा शान्ति का सन्देश,
विश्वगुरु का यह तपोमय ज्ञान का परिवेश।

आत्मदीप प्रकाश पावन परम विद्या धाम
विश्वविद्यालय यही सिद्धार्थ जिसका नाम।

शिक्षक दिवस का प्रणाम

सब शिक्षकों का मन से हम सम्मान करते हैं।
शिक्षक दिवस निज गुरुजनों के नाम करते हैं।
जिन गुरुजनों की कृपा से बन पाये जो कुछ आज–
उनको कृतज्ञ भाव से प्रणाम करते हैं।

हिन्दी भाषा

हिन्दी भाषा हिन्द के मानस की पहचान।
राग–विविधता से भरी, मधुर सुरीली तान।।
मधुर सुरीली तान देश की आन–बान है।
डेढ़ अरब लोगों के, मन का स्वाभिमान है।
हैं अमूल्य मोती जैसी, भारत की भाषा।
पिरो रही उनको, बन तागा हिन्दी भाषा।।

हिन्दी दिवस अब आया

हिन्दी दिवस अब आया,
चलो न सब मिलि के मनायें।
हिन्दी हमारी है राजभाषा,
जन–गण–मन की यह अभिलाषा।
इसका सम्मान बढ़ायें–
चलो न सब मिलि के मनायें।
देश की सब भाषाएं न्यारी।
सब हैं सुन्दर, सब हैं प्यारी।
सबको हम आगे बढ़ायें–
चलो न सब मिलि के मनायें।
दिल से दिल का रिश्ता जोड़े।
हमको उन्नति–पथ पर मोड़े।
ऐसा सुविचार फैलायें–
चलो न सब मिलि के मनायें।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में 79वाँ स्वतंत्रता दिवस उत्साहपूर्वक सम्पन्न

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में दिनांक 15 अगस्त 2025, शुक्रवार को 79वाँ स्वतंत्रता दिवस बड़े ही उत्साह, गरिमा एवं देशभक्ति के उल्लास के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति प्रो. कविता शाह द्वारा ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान के साथ किया गया। इस अवसर पर उन्होंने अपने उद्‌बोधन में स्वतंत्रता आंदोलन के महानायकों को नमन करते हुए कहा कि हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने त्याग, तपस्या और बलिदान के बल पर हमें आजादी दिलाई है। उनकी स्मृतियों को जीवंत रखना और राष्ट्रहित में योगदान देना हम सभी का कर्तव्य है। शिक्षा ही वह साधन है जो युवा पीढ़ी को जागरूक कर राष्ट्र निर्माण के मार्ग पर अग्रसर करती है। विद्यार्थी समाज का भविष्य हैं और उन्हें अनुशासन, परिश्रम एवं समर्पण के साथ देश की प्रगति में भागीदारी निभानी चाहिए।

कुलपति महोदया ने विश्वविद्यालय परिवार से आह्वान किया कि वे शोध, नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका सुनिश्चित करें।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर में एनसीसी कैडेट्स द्वारा भव्य परेड का आयोजन किया गया, जिसने सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम में देशभक्ति से ओतप्रोत वातावरण ने विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों में एक नई ऊर्जा का संचार किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार श्री दीनानाथ यादव, मुख्य नियंता ,विभिन्न संकायों के शिक्षकगण, अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र–छात्रा बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

'कैंपस कनेक्ट' का प्रथम अंक विमोचित

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में 15 अगस्त 2025 स्वतंत्रता दिवस समारोह के उपरांत विश्वविद्यालय के समाचार पत्र "कैंपस कनेक्ट" के प्रथम अंक का लोकार्पण विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह द्वारा किया गया। इस अवसर पर कुलपति महोदया ने कहा कि यह समाचार पत्र विश्वविद्यालय की शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं शोधपरक गतिविधियों का दर्पण बनेगा और विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मकता प्रस्तुत करने का एक सशक्त मंच प्रदान करेगा।

उन्होंने कहा कि "कैंपस कनेक्ट" न केवल विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को अभिलेखित करेगा, बल्कि समाज और अकादमिक जगत तक उसकी पहुँच को भी विस्तारित करेगा। इस पत्रिका में विश्वविद्यालय में चल रही विविध गतिविधियों, शोध कार्यों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं एवं विशेष आयोजनों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जाएगा। साथ ही यह विद्यार्थियों की रचनात्मक क्रियाशीलता को भी अभिव्यक्त करेगा।

पत्रिका में विद्यार्थियों के कविता–पाठ, व्यंग्य, प्रेरक कहानियाँ, लघु लेख, प्रशिक्षण अनुभव और शोध संबंधी लेख प्रकाशित किए जाएँगे। इसके अतिरिक्त पुरातन छात्रों (Alumni) की रचनाओं और उनके अनुभवों को भी स्थान दिया जाएगा, जिससे वर्तमान छात्र–छात्राओं को प्रेरणा मिल सके।

चूँकि विश्वविद्यालय का नाम महात्मा गौतम बुद्ध की पावन स्मृति से जुड़ा है, इसलिए पत्रिका में समय–समय पर बुद्ध के विचारों, जीवन–दर्शन एवं प्रेरक तथ्यों को भी सम्मिलित किया जाएगा। इससे विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों, शांति और करुणा की भावना का विकास होगा।

साथ ही पत्रिका में नवाचार एवं कौशल विकास से संबंधित विचारों और गतिविधियों को स्थान मिलेगा, जिससे युवा वर्ग में सृजनात्मकता और उद्यमशीलता को प्रोत्साहन मिल सके। इस प्रकार यह मासिक समाचार पत्र केवल सूचनाओं का संकलन ही नहीं होगा, बल्कि विश्वविद्यालय परिवार की सामूहिक ऊर्जा, सृजनशीलता और बौद्धिक संवाद का प्रतिबिंब भी बनेगा।

कैंपस कनेक्ट के संपादक प्रो हरीशकुमार शर्मा, सह संपादक डॉ. अविनाश प्रताप सिंह तथा संपादकीय टीम में डॉ. शिवम शुक्ला, डॉ. रेनू त्रिपाठी, डॉ अनुज कुमार एवं डॉ. सत्यम मिश्रा सक्रिय रूप से योगदान कर रहे हैं।

इस अवसर पर रजिस्ट्रार मुख्य नियंता, समस्त संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, शिक्षकगण, अधिकारी, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहे।

एनसीसी द्वारा वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम के अंतर्गत स्वतंत्रता दिवस पर आयोजन

15 अगस्त 2025 (शुक्रवार) को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में 79वाँ स्वतंत्रता दिवस बड़े ही हर्षोल्लास और गौरवपूर्ण वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के एनसीसी कैडेट्स द्वारा 'वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम' के अंतर्गत विविध

कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति प्रो. कविता शाह द्वारा किया गया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह योजना सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास के साथ–साथ राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक एकता को मजबूत करने में सहायक है।

एनसीसी कैडेट रितु एवं उनकी टीम ने भारतीय सेना के ऑपरेशन सिन्दूर पर आधारित आकर्षक 3D फोटो प्रस्तुति दी और इसके महत्व को विस्तार से बताया। इसी क्रम में कैडेट नागेंद्र यादव एवं

उनकी टीम ने नशा मुक्ति पर आधारित नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया, जिसने समाज को नशामुक्त बनाने का प्रेरक संदेश दिया।

कार्यक्रम में एसएसबी के असिस्टेंट कमांडेंट श्री आशीष राघव एवं उप निरीक्षक श्री संजय चौहान ने वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम पर अपने विचार रखे और सीमा सुरक्षा बल की गतिविधियों पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म भी प्रदर्शित की गई। कार्यक्रम का संचालन कैडेट रजनीश द्वारा किया गया तथा अंत में कैडेट्स को प्रेरक फिल्म "लक्ष्य" दिखलाई गई। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार श्री दीनानाथ यादव, मुख्य नियंता प्रो. दीपक बाबू, शिक्षकगण, कर्मचारी एवं छात्र–छात्राएँ बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

स्वतंत्रता दिवस का यह आयोजन न केवल देशभक्ति की भावना को प्रबल करता है बल्कि विश्वविद्यालय परिवार में नई ऊर्जा और राष्ट्रीय चेतना का संचार भी करता है।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय और सनवे यूनिवर्सिटी, मलेशिया ने मिलाए हाथ

स्थानीय से वैश्विक की ओर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की नई यात्रा

19 अगस्त, 2025 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, ने एक नया इतिहास रचते हुए अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त सनवे यूनिवर्सिटी, मलेशिया के साथ शैक्षणिक एवं अनुसंधान सहयोग को सुदृढ़ करने के लिए एक महत्वपूर्ण समझौता–ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता न केवल विश्वविद्यालय के लिए गौरव का क्षण है, बल्कि पूर्वांचल के शैक्षणिक परिदृश्य में वैश्विक अवसरों के द्वार खोलने वाला अध्याय भी है।

समझौते पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. कविता शाह और सनवे यूनिवर्सिटी की ओर से वहाँ के कुलपति प्रो. सिब्रांडीज पोपेम्मा ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर दोनों कुलपतियों ने इसे विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए अंतरराष्ट्रीय मंच की ओर बढ़ाया गया एक सशक्त कदम बताया और विश्वास व्यक्त किया कि यह पहल आने वाले समय में शिक्षा, शोध और नवाचार के क्षेत्र में नई संभावनाओं का सृजन करेगी।

एमओयू के अंतर्गत दोनों संस्थानों के बीच शैक्षणिक आदान–प्रदान को प्रोत्साहन मिलेगा, संयुक्त शोध परियोजनाओं का संचालन होगा, संकाय और छात्र विनिमय कार्यक्रम प्रारंभ किए जाएंगे, साथ ही संगोष्ठी, कार्यशाला और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन होगा। कला, विज्ञान, वाणिज्य और प्रबंधन जैसे विविध क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक परियोजनाएं विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को वैश्विक स्तर पर अनुभव और पहचान (exposure) प्रदान करेंगी।

यह समझौता सिद्धार्थ विश्वविद्यालय जैसे अपेक्षाकृत ग्रामीण परिक्षेत्र में स्थित संस्थान के लिए अत्यंत महत्व रखता है। इससे न केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी को क्षेत्रीय स्तर पर प्रोत्साहन मिलेगा, बल्कि विद्यार्थियों को रोजगारपरक अवसरों की नई दिशा भी मिलेगी। कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि यह समझौता हमारे विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को विश्वस्तरीय मंच प्रदान करेगा और भारत तथा मलेशिया की शैक्षणिक परंपराओं को जोड़ते हुए एक सशक्त वैश्विक शैक्षणिक सहयोग का मार्ग प्रशस्त करेगा।

समझौते को मूर्त रूप देने में दोनों विश्वविद्यालयों के अंतरराष्ट्रीय प्रकोष्ठों का विशेष योगदान रहा। सनवे यूनिवर्सिटी मलेशिया के सेंटर फॉर ग्लोबल इंगेजमेंट एंड मोबिलिटी के प्रो. जेड थम तथा सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के गुणवत्ता प्रकोष्ठ के निदेशक एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो. सौरभ ने इस दिशा में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

कुलपति प्रो. कविता शाह ने इस एमओयू को विश्वविद्यालय की उपलब्धियों में एक स्वर्णिम अध्याय बताते हुए विश्वविद्यालय परिवार के सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों, विभागाध्यक्षों, संकायाध्यक्षों, अधिकारियों और कर्मचारियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह समझौता सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ करेगा और भविष्य में शिक्षा एवं अनुसंधान क्षेत्र में ठोस परिणाम देने वाला साबित होगा।

यह पहल स्पष्ट करती है कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय अब केवल क्षेत्रीय स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक शिक्षा जगत के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ने को तैयार है। यह समझौता विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए नए अवसरों का द्वार खोलेगा और विश्वविद्यालय को एक सशक्त वैश्विक शैक्षणिक नेटवर्क से जोड़ते हुए उच्च शिक्षा के क्षितिज पर नई ऊँचाइयाँ प्रदान करेगा।

सम्पादकीय

'धम्मपद' में भगवान बुद्ध कहते हैं–

असज्झायमला मन्ता अनुट्ठानमला घरा
मलं वणस्स कोसज्जं पमादो रक्खतो मलं।
मलित्थिया दुच्चरितं मच्छेरं ददतो मलं
मला वे पापका धम्मा अस्मिं लोके परम्हि च।
ततो मला मलतरं अविज्जा परमं मलं
एतं मलं पहत्वान निम्मला होथ भिक्खवो।

अर्थात् स्वाध्याय न करना मन्त्रों का मल है। उद्यम न करना घरों का मल है। सुस्ती शरीर का मल है और प्रमाद रक्षकों का मल है। दुश्चरित्रता स्त्रियों का मल है। कंजूसी दाता का मल है। पाप कर्म इस लोक और परलोक दोनों के मल हैं। इन सब मलों से बड़ा मल है अविद्या। इस मल का परित्याग कर हे भिक्षुओ! निर्मल बन जाओ।

भगवान बुद्ध ने यहाँ अविद्या को सबसे बड़ा मल बताया है। अविद्या अर्थात् विद्याहीनता की स्थिति, अज्ञान की दशा। 'विद्या' शब्द में 'विद्' धातु है, जिसका अर्थ जानना या ज्ञान है। इस तरह विद्या का अर्थ हुआ– विद्+या = जिसको जान लिया जाये या जिसका ज्ञान हो। अतः विद्या का सीधा अर्थ जानने से है, ज्ञान से है। इसी के समानान्तर 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग भी हम करते हैं। आजकल इसी का चलन अधिक है। 'शिक्षा' का सम्बन्ध सीखने से है, सीखने की इच्छा से है, सीखने की प्रक्रिया से है। इस प्रकार शिक्षा और विद्या सीखने–जानने की प्रक्रियाएं हैं। सीखने की प्रक्रिया जानने से पहले आती है। पहले कुछ सीखेंगे, तभी तो उसे जानेंगे। कह सकते हैं कि शिक्षा प्रविधि है और विद्या या ज्ञान उसकी उपलब्धि। शिक्षा उद्यम है और विद्या उसका सुफल। शिक्षा हम विद्या–प्राप्ति के लिये ग्रहण करते हैं। अतः दोनों का अपने–अपने स्थान पर महत्त्व है। दोनों का परस्पर अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। शिक्षा की अनेक प्रविधियाँ हैं और हो सकती हैं। शिक्षालयों एवं विद्यालयों का कार्य इसी सीखने–जानने की प्रक्रिया को गति देना है। शिक्षा की यह औपचारिक प्रक्रिया शिक्षकों के द्वारा संचालित होती है। यहीं पर नवाचारों की भूमिका विशेष हो जाती है। नवाचारों हेतु शिक्षक की योग्यता के साथ ही संस्थान में उपलब्ध संसाधन अपनी विशेष महत्ता रखते हैं। परिस्थिति, संसाधनों और सामर्थ्य के अनुसार शिक्षक नयी–नयी प्रणालियों, पद्धतियों और तकनीकों का प्रयोग कर सकते हैं, जिनसे अधिगम अधिक सुगम हो सकता है। 'पंचतन्त्र' जैसी विश्वप्रसिद्ध रचना इस नवाचारी शिक्षा की ही देन है. जिसे राजकुमारों को रोचक ढँग से शिक्षा प्रदान करने के लिये पण्डित विष्णु शर्मा द्वारा रचा गया।

आज शिक्षक हैं, पहले गुरू होते थे। गुरू का कार्य ज्ञान कराना है, शिक्षक का सिखाना। ज्ञान में अनुभव की अधिक भूमिका होती है और शिक्षा में अध्ययन की। हमारी परम्परागत शिक्षा–प्रणाली में दोनों की बराबर भूमिका रहती थी। तब हमारे लिये श्रम करना हेय कार्य नहीं था। परन्तु अंग्रेजों की देन हमारी आधुनिक शिक्षा पद्धति मात्र अध्ययन तक सीमित होकर रह गयी। अनुभव की महत्ता उसमें घट गयी। अध्ययन, जैसा कि उसकी प्रवृत्ति है, बैठे–बैठे भी हो जाता है, सो अंग्रेजी शिक्षा–पद्धति ने हमें उसी राह पर डाल दिया, जिसमें कुर्सी पर बैठे–बैठे ही अध्ययन करना था, तदुपरान्त उसी तरह का (बैठकर करने वाला) काम (नौकरी) ढूँढ़ना था। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि हमारे मन में श्रम के प्रति हेय भाव उत्पन्न हो गया और स्वावलम्बन की महत्ता भी हम भुला बैठे। येन–केन–प्रकारेण नौकरी को ही हमने शिक्षा का फल माना और उसी के मिलने, न मिलने को शिक्षा की सफलता या विफलता का मानदण्ड बना लिया।

शिक्षा शिक्षार्थी को योग्य बनाती है। योग्य बनाने का अभिप्राय मात्र नौकरी के योग्य बनाने से ही नहीं है। योग्यता किसी भी कार्य को अच्छे ढँग से और सफलतापूर्वक सम्पन्न करने की पूर्व शर्त है। जिसमें जैसी योग्यता होगी, उसे वैसी ही सफलता प्राप्त होगी। इसलिये अपने को योग्य बनाना एक शिक्षार्थी का ध्येय होना चाहिए, न कि मात्र उपाधि अर्जित करना। सफलता के लिये अच्छी उपाधि एवं योग्यता दोनों का महत्त्व है। उपाधि अच्छी हुई और योग्यता उस स्तर की नहीं हुई तो वह उपाधि भी कटघरे में आ जाती है। योग्यता है, पर तदनुकूल वांछित उपाधि नहीं है तो योग्यता प्रदर्शन का अवसर ही नहीं मिलेगा। इसलिये एक विद्यार्थी के लिये आवश्यक है कि वह दोनों पर ध्यान दे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 हमें हमारी जड़ों से जोड़ने का उपक्रम है। अपनी प्राचीन पद्धति में ही नवीनतम प्रणालियों का समावेश इसकी विशेषता है। अध्ययन और अनुभव दोनों को इसमें महत्ता दी गयी है। सुन के सीखने के बजाय करके जानने पर जोर दिया गया है। मतलब कि शिक्षा और विद्या दोनों का समन्वय करने का प्रयास इसमें किया गया है। यह हमारे कौशल के निखार का साधन भी बने और चरित्र–निर्माण का माध्यम भी–ऐसी अपेक्षा की गयी है। इसके क्रियान्वयन में शिक्षकों की बड़ी भूमिका रहने वाली है। यह एक बड़ा अभियान है और तदनुसार बड़ा समय भी इसके लिये निर्धारित किया गया है। आशा की जानी चाहिए कि समय के साथ इसके सुखद परिणाम देखने को मिलेंगे। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय माननीया कुलपति प्रो. कविता शाह जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के क्रियान्वयन हेतु प्रतिबद्ध है और यहाँ के शिक्षक इस हेतु कटिबद्ध हैं।

सितम्बर माह अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। शिक्षकों को महत्ता देने वाला शिक्षक दिवस इसी माह में 5 सितम्बर को आता है। इसे महान शिक्षाविद् और पहले भारत के उपराष्ट्रपति, फिर राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद को सुशोभित करने वाले डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। 14 सितम्बर को हम हिन्दी दिवस के रूप में मनाते हैं। हिन्दी भारत की और हमारे प्रदेश की राजभाषा है। उसको उसका उचित स्थान और सम्मान मिले, यह हम सबकी अभिलाषा है। हिन्दी को राजभाषा के रूप में उसका वास्तविक अधिकार मिले और वह हम सबके गर्व का कारण बने, ऐसी शुभकामना है। इसके लिये हमसे जो प्रयत्न बन पड़े, हम करें, तो यह कार्य और भी सुगम हो जायेगा।

पूर्व के जनसंघ और आज की भारतीय जनता पार्टी की सैद्धान्तिकी को आधार देने वाले पुरोधा राजनीतिज्ञ ओर मौलिक विचारक पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की भी जयन्ती इसी माह की 25 तारीख को पड़ती है। एकात्म मानववाद और अन्त्योदय जैसी अनूठी संकल्पनाएं प्रस्तुत करने वाले दीनदयाल उपाध्याय एवं शिक्षकों के गौरव डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को नमन।

सितम्बर माह में ही भारतीय राजनीति एवं राष्ट्रनीति को अभिनव आयाम देने वाले देश और विदेश में लोकप्रिय हमारे देश के यशस्वी और तेजस्वी प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी जी का भी जन्मदिन पड़ता है। उन्हें इस हेतु भूरिशः बधाई और शुभकामनाएं।

शिक्षक दिवस एवं हिन्दी दिवस को ध्यान में रखते हुए हम इस अंक में अपने देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद तथा द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के कुछ समीचीन विचारों को स्थान दे रहे हैं। हमें विश्वास है कि इनके यह विचार भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रति हमारे मन में आस्था, उत्साह और प्रेरणा जगाने में यह प्रभावी सिद्ध होंगे।

बुद्ध–प्रसंग

''क्या राह–खर्च बाँधता है,
भोगों का वास किसमें है?
मनुष्य को क्या घसीट ले जाता है,
संसार में क्या छोड़ना बड़ा कठिन है?
इतने जीव किसमें बँधे हैं,
जैसे जाल में कोई पक्षी?''

''श्रद्धा राह–खर्च बाँधती है,
ऐश्वर्य में सभी भोग बसते हैं?
इच्छा मनुष्य को घसीट ले जाती है,
संसार में इच्छा को छोड़ना बड़ा कठिन है।
इतने जीव इच्छा में बँधे हैं,
जैसे जाल में कोई पक्षी।''

(पाथेय्यसुत्त; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से प्रकाशित राहुल सांकृत्यायन की पुस्तक 'पालि साहित्य का इतिहास' से साभार)

भारतीय–दर्शन

डॉ. एस. राधाकृष्णन

जिन लोगों पर पश्चिमी संस्कृति का अधिक प्रभाव नहीं पड़ा है, वह विचारों और व्यवहार में व्यवहार के अर्थ में रूढ़िवादी हैं तथा कुछ ऐसे भी हैं जो कि पश्चिमी विचार की पद्धतियों में शिक्षित हुए हैं, इन्होंने हताशा भरी स्वाभाविक तार्किकता के दर्शन को माना है तथा वह हमसे अतीत के भार से मुक्त होने के लिए भी कहते हैं। यह परंपराओं को बर्दाश्त न करना और काल की बुद्धिमत्ता के प्रति संदेह दर्शाता है। प्रगतिशीलों का यह दृष्टिकोण आसानी से समझ में आ जाता है। भारत की आध्यात्मिक विरासत ने भारत की आक्रमणकारियों और इसे नष्ट करने वालों से रक्षा नहीं की थी। ऐसा मालूम पड़ता है कि यह वर्तमान स्थिति के साथ त्रुटिपूर्ण भी थी याइसने इसे धोखा दिया था। यह सभी पश्चिम की भौतिक उपलब्धियों की नकल के प्रति उत्सुक थे और इन्होंने प्राचीन सभ्यता की जड़ों को नुकसान पहुँचाया, ताकि पश्चिम से आने वाली नवीनताओं को स्थान मिल सके। भारतीय विचार यहाँ के विश्वविद्यालयों में अध्ययन का स्थान अभी तक नहीं पा सका है और अभी भी विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में यह विषय महत्वहीन है। मैकाले की दी गई शिक्षा नीति का सांस्कृतिक महत्त्व एक तरफ से इस पर भार बढ़ाये हुए है। साथ–ही–साथ यह पश्चिमी संस्कृति को हमें न भूलने देने के लिए भी सजग है तथा इसने हमारी अपनी संस्कृति सेहमें प्यार करने में भी हमारी सहायता नहीं की। कुछ हद तक मैकाले सफल हो गए, क्योंकि हमने भारतीयों को अंग्रेजों से भी अधिक अंग्रेज बनाने के लिये शिक्षित कर दिया है। स्वाभाविक रूप से ऐसे लोग भारतीय संस्कृति के इतिहास में तीव्र विदेशी आलोचना करने में साथ नहीं थे। इन्होंने भारतीय संस्कृति को असहमति, त्रुटि और अन्धविश्वास के रूप में ही देखा। इनमें से कुछ लोगों ने यह घोषणा भी कर दी कि यदि भारत उन्नत होना चाहता है, तब इंग्लैण्ड उसकी 'आध्यात्मिक माता' और ग्रीस उसकी 'आध्यात्मिक नानी' होनी चाहिए। चूँकि इनका धर्म में विश्वास नहीं है, इसलिये वे हिन्दू धर्म की जगह ईसाई धर्म का प्रस्ताव नहीं देते हैं। वर्तमान युग के भ्रम और पराजय के शिकार ये लोग भारतीय विचार के प्रति प्रेम को राष्ट्रवादी कमजोरी बताते हैं।

यह भी एक विचित्र घटनाक्रम है कि जब भारत पश्चिम की नजरों में विकृत होना समाप्त हो रहा है, तब यह अपने ही बेटों की आँखों में वही बनना शुरू हो रहा हैं पश्चिम ने भारत के दर्शन को बेकार, इसकी कला को बचकाना, इसकी कविता को प्रेरणाहीन और धर्म को विकृत तथा नैतिकता को जंगली बताने की भरपूर कोशिश की थी। किन्तु अब पश्चिम को महसूस हो रहा है कि उसकी सोच सही नही थी, जबकि हममें से कुछ का सोचना है कि वे बिलकुल सही थे। यह भी सच है कि आज के इस युग में व्यक्ति को पुरानी संस्कृति में नहीं ढकेला जा सकता है और उसे सन्देह के खतरों से भी नहीं बचाया जा सकता, मगर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम एक बनी हुई नींव पर बेहतर इमारत बना सकते हैं, बजाय इसके कि हम पुरानी इमारत को ढहाकर नई नैतिकता और जीवन की इमारत बनायें। हम अपने जीवन के स्रोत से अलग नहीं हो सकते हैं। दार्शनिक योजनाएं जीवन की उत्पाद हैं तथा हमारे इतिहास की विरासत वह भोजन है, जिस पर हम निर्भर हैं।

रूढ़िवादियों को प्राचीन विरासत की भव्यता और आधुनिक संस्कृति की ईश्वरविहीनता में विश्वास है और सुधारवादी भी प्राचीन विरासत की व्यर्थता और तार्किकता के स्वाभाविक मूल्यों पर यकीन करते हैं। इन दृष्टिकोणों पर बहुत कुछ कहा जा चुका है, परन्तु भारतीय विचारों का इतिहास जब ठीक से पढ़ा गया, तब इसने हमें दोनों में त्रुटियाँ बतायीं। जो लोग भारतीय संस्कृति को बेकार मानते हैं, वे इससे अनजान हैं और जो लोग इसे पूरी तरह से ठीक बताकर इसकी प्रशंसा करते हैं, वे भी इससे अनभिज्ञ हैं। सुधारवादी और रूढ़िवादी दोनों ही पुरानी शिक्षा और नई उम्मीद के लिये खड़े हैं। इन्हें एक–दूसरे के पास आना चाहिए और एक–दूसरे को समझना चाहिए।...''

(प्रभात प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन की पुस्तक 'हिन्दू–दर्शन' से साभार)

भारतीय–शिक्षा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

इस देश को हमने स्वतंत्र कर दिया, लेकिन देश को स्वतंत्र कर लेना ही काफी नहीं है। हमने जो स्वप्न देखे थे और स्वतंत्र भारत का जैसा चित्र अपने सामने रखा था, जिसमें न बीमारी हो, न दुःख–दारिद्र्य हो और न अशिक्षा, उसको हम पूरा नहीं कर सके हैं। इसके लिए तपस्या और त्याग की जरूरत है। मुझे यह आशा है कि जिस तरह से ब्रिटिश गवर्नमेंट के साथ संघर्ष के जमाने में हम सब कुछ करने के लिए तैयार थे और गांधी जी के बताए मार्ग के अनुसार चलकर अपने को आगे बढ़ा रहे थे, उसी तरह अब जो रचनात्मक काम करना है, नए समाज के संगठन का काम करना है, उसमे भी हम त्याग करने के लिए तैयार हो जाएंगे और वह काम पूरा कर लेंगे। मैं यह भी मानता हूँ कि यह काम उससे अधिक कठिन होता है। विध्वंस का काम हम खत्म कर चुके हैं और अब हमें सृजन का काम करना है। हिंदुस्तान को हमें बनाना है। अगर हममें से प्रत्येक मनुष्य यह सोचे कि हमे इसे बनाना है और अपनी तरफ ही नहीं, बल्कि सारे संसार के कल्याण और तरक्की की तरफ ध्यान देना है तो अपने देश का और सारे संसार का हम कल्याण कर सकेंगे। हमने अगर स्वार्थी और अदूरदर्शी लोगों को पैदा किया तो देश और संसार दोनों का अहित होगा। इसमें सबसे बड़ा भाग विद्यालयों का है कि वह अच्छे–से–अच्छे नागरिक तैयार करें।

जिस समय अंग्रेजी शिक्षा–प्रणाली की नींव इस देश में पड़ी थी, तब लॉर्ड मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा का लक्ष्य सरकारी कर्मचारी तैयार करना निश्चित कर लिया था और उस समय से आज तक सरकारी विश्वविद्यालयों ने उसी लक्ष्य को अपने सामने बराबर रखा है।उन विश्वविद्यालयों में समय–समय पर नियमों में, पाठ्यक्रम में और पठन–पाठन की शैली में परिवर्तन होता गया है; पर वह लक्ष्य कभी नहीं बदला। इसी प्रकार हमारी शैली और पाठ्यक्रम में अदल–बदल होते रहने पर भी हमारा लक्ष्य सदा एक ही होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग का यह उद्देश्य और प्रयास होना चाहिए कि उच्च शिक्षा और ज्ञान के साथ अपने विद्यार्थियों में सच्चरित्रता और शुद्ध सेवा भाव उत्पन्न करके उनको इस योग्य बनायें कि देश–हित और लोक–हित के काम उनके द्वारा संपादित हो सकें। देश की अवस्था इतनी गिरी हुई है इसके लिए असंख्य त्यागी सेवकों की आवश्यकता है, और वे भी ऐसे सेवक नहीं जो केवल धन और सुख की लालसा को छोड़ सकते हों, बल्कि ऐसे सेवक जो यश और ख्याति की भी अभिलाषा न रखते हों। सच पूछिए तो धन और सुख की लालसा छोड़ देना उतना कठिन और कष्टकर नहीं है जितना यश और ख्याति की अभिलाषा से मुँह मोड़ना। पर यदि हम सच्ची सेवा करना चाहते हैं तो वह ग्रामीणों के साथ रहकर ही हो सकती है और उसका यशगान करने वाला बिरला ही कोई मिलेगा। यदि धन की लालसा धन के लिए न रखकर पर–सेवा की योग्यता प्राप्त करने के लिए रखी जाय, तो वह भी मनुष्य को उचित सीमा से बाहर नहीं निकलने देगी और मनुष्य धन का दास न बनकर उसका स्वामी, वास्तविक रूप से जैसा होना चाहिए, वैसा हो सकेगा। इसलिए विद्यालयों का मुख्य कर्तव्य विद्यार्थियों का चरित्र गठन ही है। पर वहाँ का जीवन भी कुछ ऐसा होना चाहिए, जिसमें भविष्य के काम का कुछ अनुभव भी छात्रों को हो जाए। इस कारण ज्ञान–विज्ञान के विषयों के अतिरिक्त शिक्षा–क्रम में ऐसे विषयों का समावेश होना चाहिए जिनसे ग्रामीण जीवन के विविध अंगों से उनका पूर्ण परिचय हो जाय और ग्रामीणों की सेवा की पूरी योग्यता उनमें आ जाय।

शिक्षा का मुख्य ध्येय यही है कि प्रत्येक आदमी के आंतरिक जगत् में सामंजस्य हो और उसका बाह्य जगत् के अन्य प्राणियों से भी सामंजस्य हो। यद्यपि बाहरी तौर पर देखने में तो कोई भी आदमी एक ही लगता है, क्योंकि उसके न तो दो मुख दिखाई देते हैं और न आठ हाथ–पाँव, किंतु यदि साधारण तौर पर एक दिखने वाले आदमी के आंतरिक गठन को देखा जाय तो पता चलेगा कि उसमे एक के बदले में अनेक आदमी एक साथ ही मौजूद हैं। हमारे पूर्वजों ने दशानन, पंचानन, चतुरानन इत्यादि देवताओं, असुरों और आदमियों की जो कल्पना की थी वह केवल थोथी कल्पना ही न थी, उसके पीछे यह मनोवैज्ञानिक सत्य भी था कि ऊपर से देखने में चाहे कोई कितना ही

एक क्यों न लगता हो, किंतु संभव है कि उसके अंदर अनेक व्यक्ति एक साथ ही मौजूद हों।एक व्यक्ति में अनेक व्यक्ति होने की बात इसलिए पैदा होती है कि मनुष्य की विवेक–बुद्धि, वासनात्मक बुद्धि और भौतिक इंद्रियों में ऐसा चिर और सहज सामंजस्य नहीं है कि वह कभी टूटे ही नहीं। अभ्यास और ज्ञान द्वारा ही उसमें यह सामंजस्य कायम किया जा सकता है। ज्ञान, कर्म और भक्ति द्वारा इस सामंजस्य को स्थापित करने को ही हमारे यहाँ योग कहा जाता था। एक दफे योग द्वारा सामंजस्य स्थापित हो जाने पर ही यह सामंजस्य सर्वदा के लिए कायम नहीं हो जाता। प्रतिक्षण इसको बनाए रखने के लिए योग की साधना और तपस्या करनी पड़ती है। क्षण भर की भी गफलत से वह जीवन की कमाई खो सकता है। क्योंकि उतनी ही देर में वह सामंजस्य टूट सकता है और वासना उस पर विजय पा सकती है। इसीलिए तो हमारे यहाँ कहावत है कि– या जागे कोई योगी या जागे कोई भोगी– सच तो यह है कि योगी कभी सोता ही नहीं। उसको सतत जाग्रत् रहना होता है, ताकि उसका यह आंतरिक सामंजस्य,जिसके द्वारा उसका जीवन सफल होता है और उसे चिरस्थाई आनंद और सत्य प्राप्त होता है, किसी क्षण भी न टूटे।जिस बात को हमारे पूर्वज योग कहते थे, उसी को अपने विद्यार्थियों को देने का काम विश्वविद्यालय का होना चाहिए। आज के शिक्षा–शास्त्री इस बात को मानते हैं कि शिक्षा का ध्येय यही है कि विद्यार्थी के आंतरिक जगत में पूर्ण सामंजस्य स्थापित हो जाय और उसका व्यक्तित्व विभक्त और टुकड़े–टुकड़े न रह जाय।

इस प्रकार के विभक्त व्यक्तित्व का खतरा वैसे तो साधारणतया प्रत्येक समाज में और प्रत्येक समूह में बना ही रहता है, किंतु यह उस समाज में कहीं ज्यादा हो जाता है, जहाँ एक साथ ही कई संस्कृतियाँ, कई ऐतिहासिक परंपराएँ और कई सामाजिक श्रृंखलाएँ एक स्थान पर ही मौजूद होती हैं। हमारे देश में इस प्रकार की विभिन्नताएँ मौजूद हैं और इसलिए हमारे देश में इस बात का पूरा–पूरा खतरा बना रहेगा कि हमारे करोड़ों नर–नारियों का व्यक्तित्व विभक्त बना रहे। यदि कहीं यह बात रही तो हमारा समाज और देश आंतरिक कलह, द्वेष और अज्ञात मतभेद का शिकार बने रहेंगे और किसी प्रकार की उन्नति और प्रगति न कर सकेंगे।

अतः हमारे लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अविलंब ऐसी कार्यवाही करें, जिससे हमारे देश का यह खतरा जल्द–से–जल्द दूर हो। यह बात तो स्पष्ट है कि खतरे को पुलिस के डंडे और फौज की बंदूक से दूर नहीं किया जा सकता और न इसको किसी कानून या अदालत के जरिए मिटाया जा सकता है। अगर यह दूर किया जा सकता है तो केवल सत्–शिक्षा के द्वारा– और यह काम हमारे विश्वविद्यालय ही कर सकते हैं।

(प्रभात प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की पुस्तक 'भारतीय शिक्षा' से साभार)

शिक्षक हौं सगरे जग कौं..

–हरीशकुमार शर्मा

आजकल मनाए जाने वाले तमाम तरह के दिवसों में से एक दिवस शिक्षकों का भी आता है। वर्तमान की भागदौड़ भरी आपाधापी वाली एकांतिक होती जाती व्यस्त जिंदगी में हर काम के लिए दिवस तय होते जा रहे हैं कि और न सही तो कम–से–कम उस दिवस विशेष पर तो महत्त्वपूर्ण चीजों के लिए कुछ पल खर्च कर लिये जायें। शिक्षक दिवस भी एक ऐसा ही दिवस है जिसमें निजी तौर पर या सामूहिक रूप से शिक्षण संस्थाओं में विशेषकर, समारोहपूर्वक अपने शिक्षकों को याद किया जाता है। उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त की जाती है, उन्हें सम्मानित किया जाता है।

शिक्षक दिवस भारत के पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन की स्मृति से भी जुड़ा हुआ है। महान दार्शनिक, शिक्षाशास्त्री, राजनीति विशारद, प्रशासक और राजनेता डॉ. राधाकृष्णन का जन्म इसी तिथि अर्थात 5 सितंबर को 1888 ई. में हुआ था। उन्हीं की इच्छा से उनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाना आरम्भ हुआ। एक शिक्षक के रूप में अपने कर्मशील जीवन की शुरूआत कर देश और विदेश में एक विद्वान के रूप में भारी प्रतिष्ठा अर्जित करते हुए भारत के उपराष्ट्रपति और फिर राष्ट्रपति के पद तक पहुंचने वाले डॉ. राधाकृष्णन शिक्षकों के लिए निश्चय ही एक आदर्श हैं, प्रेरणा–पुंज हैं। भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति की उद्भट व्याख्या कर उन्होंने देश से लेकर विदेश तक के विद्वत्–वर्ग में अपना जो सम्मानजनक स्थान बनाया, उसके लिए स्वामी विवेकानंद ही उदाहरण के रूप में याद आते हैं। शिक्षकों के लिए यह दिन उनके जन्मदिवस पर उनकी स्मृति को नमन करने, उनकी उपलब्धियों पर गर्व करने और उनकी सफलता से प्रेरणा लेने का भी दिन है। और, राधाकृष्णन ही क्यों, यह उन सभी महान शिक्षकों को याद करने और उनसे प्रेरणा ग्रहण करने का दिन है, जो आदर्श शिक्षक रहे हैं।

देखा जाए तो हम सब किसी–न–किसी शिक्षक या शिक्षकों की ही देन होते हैं। इसलिए अपने शिक्षकों के प्रति सम्मान करने की परंपरा यूँ तो दुनिया भर में है और रही है। पर, भारत में यह और भी विशेषरूप में रही है। हम इसे गुरु पूर्णिमा के रूप में परम्परागत ढँग से मनाते आये हैं। हमारे यहाँ तो गुरू को ब्रह्मा, विष्णु, महेश ही क्या, साक्षात परमब्रह्म मानते हुए उन्हें नमन करने की रीति प्रचलित है। अध्यात्म–साधना में तो गुरू का और भी ज्यादा महत्व है, इसलिए वहाँ गुरू के प्रति कृतज्ञता–भाव भी कुछ अधिक है। सामान्य जीवन में भी ज्ञान देने वाले गुरू या शिक्षक के प्रति सम्मान–भाव ही व्यक्त किया जाता रहा है। तमाम तरह के ऊँच–नीच के व्यवहारों के बावजूद हमारे यहाँ गुरू के मामले में तो जातिगत अंतरों को भुलाकर भी उसकी चरण–रज लेकर प्रणाम करने की प्रथा प्रचलित है।

जीवन–निर्माण में माता–पिता और गुरू– इन तीन की बहुत बड़ी भूमिका होती है। जीवन को बनाने और उसे दिशा देने में पारिवारिक वातावरण एवं गुरुजनों की शिक्षा का बड़ा योगदान होता है। माता–पिता एवं गुरू के आचरण और व्यवहार का भी व्यक्ति के जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। इसीलिए भारतीय आचार्यों ने व्यक्ति के ऊपर जो तीन ऋण स्वीकार किए, उनमें से दो तो प्रत्यक्षतः पितृ–ऋण और गुरु–ऋण के रूप में माता–पिता और गुरू से जुड़े हुए हैं और तीसरे देव–ऋण का संबंध भी कहीं–न–कहीं इनसे जुड़ जाता है, क्योंकि माता–पिता और गुरू को भी देवतुल्य माना जाता है। आज के दौर में निश्चय ही इन तीनों की महिमा में भी कुछ–न–कुछ ह्रास हुआ है। जीवन में यही तीन रिश्ते ऐसे माने गए हैं, जिन्हें अपनी संतानों या शिष्यों को आगे बढ़ते देख वास्तविक प्रसन्नता होती है। संस्कृत में एक कथन भी इसके लिए प्रचलित है कि 'सर्वत्र विजयमिच्छतु पुत्रात् शिष्यात् पराजयः'। अर्थात हर जगह विजय काम्य है, पर पुत्र और शिष्य से पराजय में ही विजय है। अपनी संतान या अपना शिष्य जब आगे बढ़ता है, सफलता की सीढ़ी चढ़ता है, किसी प्रकार की उपलब्धि हासिल करता है या अपने जन्मदाता और शिक्षा–प्रदाता से आगे निकल जाता है; तभी माँ–पिता की साध पूरी होती है और गुरू की साधना सफल होती है। एक समय ऐसा आ सकता है कि व्यक्ति की किसी उपलब्धि से उसके इष्ट मित्र और परिजनों– यहाँ तक कि भाई–बहनों में भी कुछ ईर्ष्या–भाव चाहे–अनचाहे उसके प्रति उत्पन्न हो जाए, पर माता–पिता और गुरू के मन में कभी यह भाव उदित नहीं हो सकता। उन्हें अपने बच्चे या शिष्य–शिष्या को अपने से आगे निकलते देख सच्ची प्रसन्नता की अनुभूति होती है और यदि ऐसा नहीं होता है तो समझिए कि वह गुरू सच्चा गुरू नहीं है। उसका मन निर्मल नहीं है। उसके मन में विकार है और वह सच्चे अर्थों में गुरू कहलाने का अधिकारी ही नहीं है। अपनी विरासत को हर कोई आगे बढ़ते देखना चाहता है। इस विरासत को आगे ले जाने वाले समुचित उत्तराधिकारी की खोज जहाँ पूर्ण हो जाती है, वहीं समझिए कि गुरू का मोक्ष हो जाता है, उसके कर्म को पूर्णता मिल जाती है, साधना सफल हो जाती है।

आजकल अपने शिष्यों के मन में अपने प्रति आस्था और श्रद्धा भाव जगाकर उनका दोहन और दुरुपयोग करने वाले कुछ गुरुघंटाल भी यदा–कदा दिखायी देते हैं, जो शिष्य का सच्चे मन से उन्नयन नहीं चाहते हैं। जब शिष्य इस बात को समझ जाते हैं तो स्वाभाविक ही उनके मन से भी गुरू के प्रति श्रद्धा–भाव धीरे–धीरे करके खिसकने लगता है। इसलिए शिक्षक दिवस मात्र शिष्यों द्वारा अपने गुरुओं के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने का ही दिन नहीं है, यह गुरुओं के भी आत्मचिंतन

करने का दिन है। सामान्य जीविकोपार्जन के लिए समुचित पैसा सबको चाहिए, लेकिन शिक्षक के भीतर पैसे की भूख इतनी न बढ़ जाए कि वह उचित–अनुचित का अंतर ही भुला दे। अपने शिष्यों से आदर–सम्मान की चाहना भी एक सीमा तक बुरी नहीं है, पर यह चाहत इस कदर न बढ़ जाए कि एक दिन शिष्यों और समाज की नजरों में शिक्षक का सम्मान ही गिरा दे। इसलिए शिक्षक दिवस मात्र अपने शिक्षकों को याद करने, उनका सम्मान करने या शिक्षक के रूप में स्वयं सम्मान पाने का दिन ही नहीं है; अपने दायित्व–बोध का स्मरण करने का दिन भी है। एक शिक्षक के नाते हमारी जो जिम्मेदारियाँ हैं– राष्ट्र के प्रति, समाज के प्रति, अपने विद्यार्थियों के प्रति– उनको याद करने और उन पर सोचने–विचारने का भी दिन है कि हमको क्या करना था और हमने क्या किया है। हमको कितना देना था और कितना दे पाए हैं। हमारी कमजोरियाँ क्या है और उन्हें कैसे दूर करें। हमारी अच्छाइयाँ क्या हैं और उनका कैसे विकास करें, उन्हें कैसे और आगे बढ़ाएं, जिससे कि हमारी शिष्य–परम्परा को उससे लाभ मिल सके, वह समृद्ध हो सके, सबल हो सके, समुन्नत हो सके ओर हर तरह से सशक्त, संस्कारी व सामर्थ्यवान होकर समाज व राष्ट्रोत्थान के लिये समर्पित हो सके।

(आचार्य–हिन्दी विभाग, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु)

भारत माता की जय

–प्रो. सत्येन्द्र कुमार दुबे

ऐसा क्यूँ होता है !
मन मोद भरे
आँखों से जल छलके
तन पुलके
रोम रोम की सिहरन से
उठती हिलोर
जब हिमगिरि सा दृढ़
संशयविहीन वह सिंह
गरज कर कहता–
'भारत माता की जय'

राघव की छवि धारे
रवि किरणों का पुंज सवाँरे
हे अवधूत मंच पर
फिर–फिर आ रे !
तुझे आँख भर देखे जन–मन
भरे नयन भावुक मन से
जो बोल रहे हैं–
'भारत माता की जय'

वह एक हिमालय
प्रहरी है जो उत्तर में
यह और दूसरा तू है
फैल चतुर्दिक हिममाला
या चक्रसुदर्शन
भ्रमणशील प्रत्युत्तर में,
राजनीति के महाकाश
पर आच्छादित हे अमृतसुत!
निःस्वार्थ भाव संयुत
तेरी निष्ठा के तारों मे झंकृत होता–
'भारत माता की जय'

जिनके गर्दन के नीचे है
उदर सिर्फ भारी भरकम
तेरी छाती क्या नापेंगे
जो नैतिक बल से हैं बेदम,
तेरी माता की कुटिया
के सम्मुख कोई राजभवन
भी बौना है जिसमें तेरे प्रति
बुनती थीं आशीष प्रमन,
उस माता को और मातृभूमि को
ध्यान धरे अभिमान सहित बोलो–
'भारत माता की जय'

तू सच्चा फ़कीर,
तेरी कबीर सी मस्ती ने
खींची लकीर जो
सिंहासन के आस–पास
विश्वास भरे निर्भय होकर
हुंकार भरे बाहें पसार
हे भारत माता के सपूत
तेरी जय हो !
प्राचीन और अधुनातन के
मांगलिक समन्वयकारी
हे मौलिक–साधक!
हो चुकी असाध्य राज–वीणा
तेरे छूते ही बोल पड़ी है–
'भारत माता की जय'

पुस्तकालय

–अल्पना

हमारा प्यारा पुस्तकालय!
देता है जो हमको ज्ञान
शिक्षा का नित करता दान
सबको देता यह सम्मान
इस पर है हम सबको मान
अपना सुन्दर सा ग्रन्थालय!
अनुशासन का पाठ पढ़ाता
मन का यह उत्साह बढ़ाता
पुस्तकालय जब मैं जाता
रीढ़ की हड्डी है पुस्तकालय
अपने ढंग का यह शिक्षालय
शिक्षार्थियों का शुभ देवालय!
शिक्षा को यह सुदृढ़ बनाता
कर्मव्रती यह हमें बनाता
जीवन में विश्वास बढ़ाता
सुंदर भविष्य का निर्माण कराता
धैर्यवान होना सिखलाता
ज्ञानपुंज की ज्योति जलाता
विश्वविद्यालय का गौरव, हमारी शान
रचनाकारों का रचनात्मक दान
मन के सुनसान में प्रकाशित आत्मज्ञान
हमारा प्रिय पुस्तकालय!

(पीएच.डी. शोधार्थी–हिंदी)

फूल बिछायें तो काई बात बने

दूरियाँ मन की मिटायें तो कोई बात बने।
दिल को जो दिल से मिलायें तो कोई बात बने।
राह में काँटे तो बिछे ही हैं पग–पग पर–
हम अगर फूल बिछायें तो कोई बात बने।

''भारत में जितनी ही भाषाएं क्यों न बाली जायें, भारतवासी सहस्रों वर्षों से एक ही माँ भारती का दूध पीकर एक ही संस्कृति का विकास करते आये हैं।''

–नामक्कल रामलिंगम (तमिल रचनाकार)

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में "पांडुलिपियों का वैज्ञानिक संरक्षण और भारतीय ज्ञान परंपरा" विषय पर व्याख्यान

19 अगस्त, 2025 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में कुलपति प्रो. कविता शाह के मार्गदर्शन में "पांडुलिपियों का वैज्ञानिक संरक्षण और भारतीय ज्ञान परंपरा" विषयक व्याख्यान का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सेवानिवृत्त वरिष्ठ पुरातत्व रसायन शास्त्री डॉ. दिनेश कुमार वर्मा ने पांडुलिपियों को सांस्कृतिक धरोहर बताते हुए उनके पारंपरिक एवं आधुनिक संरक्षण उपायों पर प्रकाश डाला।

डॉ. वर्मा ने बताया कि भारत के ऋषि–मुनि हल्दी युक्त कपड़ा, मोर पंख आदि जैविक तरीकों से पांडुलिपियों का संरक्षण करते थे। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि इन धरोहरों को सम्मान व श्रद्धा से देखें और उनके संरक्षण में सहयोग करें। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि 1947 में फहराए गए भारतीय तिरंगे की मूल प्रति को उनकी टीम ने भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक तकनीक से संरक्षित किया।

कार्यक्रम से पूर्व उन्होंने कला संकाय स्थित नागार्जुन ग्रंथालय एवं केंद्रीय पुस्तकालय की पांडुलिपियों का अवलोकन किया और पुस्तकालय प्रभारी डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव से वैज्ञानिक संरक्षण विधियों पर चर्चा की। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि विश्वविद्यालय ने इन पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण कर शोध हेतु उपलब्ध कराया है तथा इनके अनुवाद की भी योजना है। इस अवसर पर कपिलवस्तु म्यूजियम प्रभारी श्री विकास सिंह, प्रो. नीता यादव, प्रो. सौरभ, प्रो. प्रकृति राय, डॉ. राजेश कुमार सिंह सहित अनेक शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

डॉ. आशीष श्रीवास्तव वेनस–2025 अंतरराष्ट्रीय शोध पुरस्कार के लिये चयनित

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के प्राणीशास्त्र विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. आशीष श्रीवास्तव का चयन प्रोटीन जीवविज्ञान में उत्कृष्ट शोधकर्ता की श्रेणी में 11वें वेनस अंतरराष्ट्रीय शोध पुरस्कार (VIRA)–2025 हेतु किया गया है। यह उपलब्धि विश्वविद्यालय एवं प्रदेश दोनों के लिए गर्व का विषय है।यह प्रतिष्ठित पुरस्कार उन्हें मेम्ब्रेन प्रोटीन जीवविज्ञान के क्षेत्र में किए गए उनके अद्वितीय शोध योगदान एवं प्रभावशाली प्रकाशनों के लिए प्रदान किया जा रहा है। डॉ. श्रीवास्तव का कार्य स्वास्थ्य एवं रोग जीवविज्ञान में व्यापक निहितार्थ रखने वाले विश्व के अग्रणी अनुसंधानों में से एक माना गया है। उन्हें यह पुरस्कार 6 दिसंबर 2025 को ग्रीन पार्क, चेन्नई में आयोजित होने वाले 11वें वार्षिक शोध बैठक– एआरएम 2025 के दौरान व्यक्तिगत रूप से प्रदान किया जाएगा।

वेनस अंतरराष्ट्रीय शोध पुरस्कार विश्व स्तर पर उन शोधकर्ताओं को सम्मानित करता है जिन्होंने अनुसंधान कार्यों में उत्कृष्टता, नवाचार और नेतृत्व का परिचय दिया है। डॉ. श्रीवास्तव की यह उपलब्धि न केवल उनके व्यक्तिगत समर्पण एवं शैक्षणिक उत्कृष्टता की पहचान है, बल्कि यह सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक प्रमुखता को भी रेखांकित करती है।

प्रोटीन जीवविज्ञान, विशेष रूप से मेंब्रेन प्रोटीन के अध्ययन में उनका कार्य कोशिकीय कार्यप्रणाली और चिकित्सीय दवा–टारगेट की समझ को गहराई प्रदान करता है। यह शोध विश्वविद्यालय के छात्रों व शोधार्थियों के लिए सहयोगात्मक अनुसंधान अवसरों और उन्नत अध्ययन मॉड्यूल की दिशा में नए रास्ते खोलेगा।

इस पुरस्कार से सिद्धार्थ विश्वविद्यालय को अंतरराष्ट्रीय मानकों, नई शोध विधियों और उच्च–प्रभाव वाली परियोजनाओं में भागीदारी के अवसर प्राप्त होंगे। साथ ही, विश्वविद्यालय की वैश्विक शैक्षणिक समुदाय में प्रतिष्ठा और भी मजबूत होगी, जिससे भविष्य में अनुसंधान सहयोग, फंडिंग और शैक्षणिक साझेदारियों के नए अवसर खुलेंगे।

इस गौरवशाली उपलब्धि पर कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए गर्व का क्षण है, जो हमारी नवाचार, अनुसंधान और शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इसी क्रम में विज्ञान संकाय की अधिष्ठाता प्रो. प्रकृति राय, आईक्यूएसी निदेशक प्रो. सौरभ, अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. एस.के. श्रीवास्तव, प्राणीशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, डॉ. विनीता रावत सहित विभाग के व अन्य सभी संकाय सदस्यों ने डॉ. आशीष श्रीवास्तव को इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई दी।

कौशल विकास एवं प्लेसमेंट सहायता विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में कुलपति प्रोफेसर कविता शाह के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा तथा डॉ. लक्ष्मण सिंह के निर्देशन में 20 एवं 21 अगस्त 2025 को कौशल विकास एवं प्लेसमेंट सहायता विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता के रूप में टाइम्स प्रो के सीनियर मैनेजर फैजल खान ने विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने रोजगारोन्मुख कौशल, संचार दक्षता,

बॉडी लैंग्वेज, साक्षात्कार की तैयारी, बायोडाटा निर्माण तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म के महत्व पर विस्तार से चर्चा की।

संगोष्ठी विज्ञान, कला और वाणिज्य दृ तीनों संकायों में अलग–अलग आयोजित की गई। विज्ञान संकाय में अधिष्ठाता प्रो. प्रकृति राय ने स्वागत भाषण दिया, आभार ज्ञापन डॉ. लक्ष्मण सिंह ने किया तथा संचालन डॉ. रक्षा ने किया। कला संकाय में अधिष्ठाता प्रो. नीता यादव ने स्वागत किया, आभार ज्ञापन एवं संचालन डॉ. संतोष सिंह ने किया। वाणिज्य संकाय में अधिष्ठाता प्रो. सौरभ ने स्वागत वक्तव्य दिया, आभार ज्ञापन डॉ. विमल वर्मा ने किया तथा संचालन छात्रा शालिनी शुक्ला ने किया।

यह संगोष्ठी सिद्धार्थ विश्वविद्यालय एवं टाइम्सप्रो के बीच पूर्व में संपन्न एमओयू के अंतर्गत आयोजित की गई, जिसमें बड़ी संख्या में विद्यार्थी एवं शिक्षकगण सम्मिलित हुए और लाभान्वित हुए।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में पोर्टफोलियो मैनेजमेंट एवं स्टॉक एक्सचेंज पर व्याख्यान

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के एमबीए विभाग में दिनांक 20 अगस्त 2025 को पोर्टफोलियो मैनेजमेंट एंड स्टॉक एक्सचेंज विषय पर द्विदिवसीय व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE) के असिस्टेंट मैनेजर (रिस्क मैनेजमेंट) श्री शिवम् सिंह ने छात्रों को पोर्टफोलियो मैनेजमेंट की अवधारणा, जोखिम–रिटर्न संतुलन, निवेश विविधीकरण तथा स्टॉक एक्सचेंज की संरचना, अवसर और चुनौतियों पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने म्यूचुअल फंड्स, SIP और डिजिटल ट्रेडिंग जैसे नवीनतम रुझानों पर भी छात्रों को मार्गदर्शन दिया।कार्यक्रम के मुख्य संयोजक प्रो. सौरभ श्रीवास्तव (डीन, वाणिज्य संकाय एवं हेड, एमबीए विभाग) रहे तथा समन्वयक डॉ. कहकशाँ खान रहीं। इस अवसर पर विभाग के शिक्षकगण एवं अतिथि प्रवक्ता भी उपस्थित रहे।

IIRS–ISRO के आउटरीच प्रोग्राम के तहत सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में रिमोट सेंसिंग पर कार्यशाला

31 अगस्त 2025 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान (IIRS–Indian Institute of Remote Sensing), देहरादून, जो इसरो (Indian Space Research Organisation) की शैक्षणिक शाखा है; के तत्वावधान में IIRS–ISRO Outreach Programme के अंतर्गत एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन हुआ। गौरतलब है कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय को IIRS के आउटरीच प्रोग्राम का नोडल केंद्र बनाया गया है।

इस अवसर पर आयोजित कार्यशाला चार तकनीकी सत्रों में सम्पन्न हुई, जिनमें विशेषज्ञों ने रिमोट सेंसिंग की नवीनतम तकनीक एवं इसके बहुआयामी महत्व पर विस्तार से जानकारी दी।पहले सत्र में डॉ. हिना पांडेय (वैज्ञानिक, IIRS) ने सैटेलाइट इमेज की संरचना व प्रोसेसिंग तकनीक और इनके आपदा प्रबंधन व प्राकृतिक संसाधन संरक्षण में उपयोग पर प्रकाश डाला।

दूसरे सत्र में डॉ. मीनाक्षी कुमार (अधिष्ठाता, एकेडमिक, IIRS) ने सैटेलाइट इमेज वर्गीकरण एवं फीचर एक्सट्रैक्शन की प्रक्रिया समझाई और बताया कि यह तकनीक कृषि, वानिकी एवं शहरी नियोजन के क्षेत्र में नई संभावनाएँ खोल रही है।

तीसरे सत्र में डॉ. पूनम एस. तिवारी (वरिष्ठ वैज्ञानिक, इसरो एवं अध्यक्ष, जीआईएस विभाग, IIRS) ने सैटेलाइट इमेज विश्लेषण में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका पर चर्चा की।चौथे सत्र में श्री कमल पांडेय (वैज्ञानिक, इसरो) ने गूगल अर्थ इंजन जैसे एडवांस टूल्स एवं प्लेटफॉर्म्स की जानकारी दी।इसी क्रम में भूगोल विभाग में आयोजित ऑफलाइन सत्र में विभागाध्यक्ष डॉ. विशाल गुप्त ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि रिमोट सेंसिंग आज शिक्षा, शोध और सामाजिक विकास में अभूतपूर्व योगदान दे रही है।

कार्यशाला एवं नोडल केंद्र के समन्वयक भूगोल विभाग के सहायक आचार्य डॉ. सत्यम् मिश्र ने कहा कि रिमोट सेंसिंग तकनीक ज्ञान, शोध और रोजगार के नए अवसर खोलती है।इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकगण एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उत्साहपूर्वक उपस्थित रहे।

राज्य सरकार की स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तीकरण योजना अंतर्गत टेबलेट वितरण

31 अगस्त 2025 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत टेबलेट वितरण समारोह सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि कपिलवस्तु विधायक माननीय श्री श्याम धनी राही ने कहा कि यह योजना युवाओं को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने और उन्हें रोजगार–स्वरोजगार की दिशा में संसाधन उपलब्ध कराने की महत्वपूर्ण पहल है।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव ने आश्वस्त किया कि योजना की पात्रता प्रक्रिया पूर्ण पारदर्शिता से संचालित हो रही है। प्रो. नीता यादव ने तकनीकी संसाधनों को शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बताते हुए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। डॉ. अनुज कुमार ने कहा कि केवाईसी पूर्ण होने पर विद्यार्थियों को क्रमशः टैबलेट दिए जा रहे हैं।कार्यक्रम का संचालन डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने किया। इस अवसर पर 30 से अधिक विद्यार्थियों को टैबलेट वितरित किए गए।कार्यक्रम विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

संस्कृत दिवस पर संस्कृत महोत्सव

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा 28 अगस्त 2025 को गौतम बुद्ध प्रेक्षागृह में संस्कृत दिवस पर "संस्कृत महोत्सव" का आयोजन हुआ। दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचरण से प्रारंभ कार्यक्रम में छात्रों की लघु नाट्य प्रस्तुति द्वारा सरल संस्कृत सम्भाषण कक्षा का शुभारंभ किया गया। यह त्रैमासिक कक्षा संस्कृत वार्तालाप को प्रोत्साहित करेगी।

मुख्य वक्ता डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा (महामाया राजकीय पी. जी. कॉलेज, हंडिया, प्रयागराज) ने संस्कृत को प्राचीन और आधुनिक मूल्यों का प्रेरणास्रोत बताया। विशिष्ट वक्ता प्रो. भारतभूषण द्विवेदी (आचार्य, बुद्ध विद्यापीठ, नौगढ़, सिद्धार्थनगर) ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा की गहन छवि संस्कृत साहित्य में प्रतिबिंबित होती है।

कला संकायाध्यक्ष प्रो. नीता यादव ने संस्कृत को जीवंत बनाए रखने का आह्वान किया। संयोजक डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने भाषा की वैज्ञानिकता और भविष्यगत उपयोगिता पर प्रकाश डाला। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. आभा द्विवेदी ने किया तथा संचालन सुश्री ममता ने संस्कृत में किया।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय को बी.ए.–एलएल.बी. पाठ्यक्रम की अनुमति

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु को इंडियन बार काउंसिल, नई दिल्ली से पाँच वर्षीय एकीकृत बी.ए.–एल.एल.बी. (B.A.&L.L.B.) पाठ्यक्रम संचालित करने की औपचारिक अनुमति प्राप्त हुई है। यह पाठ्यक्रम शैक्षणिक सत्र 2025–26 से प्रारंभ होगा।

कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में बी.ए.–एल.एल.बी. पंचवर्षीय पाठ्यक्रम का आरंभ इस क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए सुनहरा अवसर है। इस कार्यक्रम से छात्र–छात्राओं को न्यायिक सेवा, अधिवक्ता पेशा, कॉरपोरेट लॉ, विधिक परामर्श, अध्यापन एवं शोध जैसे अनेक क्षेत्रों में कैरियर निर्माण का अवसर मिलेगा। गुणवत्तापूर्ण विधि शिक्षा अब स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होगी, जिससे इस अंचल के प्रतिभाशाली विद्यार्थी बड़े शहरों पर निर्भर हुए बिना अपने सपनों को साकार कर सकेंगे।

डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव को 11 लाख का शोध अनुदान

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु की विज्ञान संकाय की सहायक प्रोफेसर डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, उत्तर प्रदेश (CSTUP), लखनऊ द्वारा ₹11 लाख का अनुसंधान अनुदान प्राप्त हुआ है। उनकी परियोजना "नैनोमटेरियल्स के साथ पॉलिमर की उत्प्रेरक दक्षता में वृद्धि" पर केंद्रित है, जिसका उद्देश्य ऊर्जा, पर्यावरण एवं औद्योगिक प्रक्रियाओं में उच्च दक्षता वाले उत्प्रेरक विकसित करना है।

डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि पारंपरिक उत्प्रेरकों की सीमाओं को दूर करने हेतु ग्रेफीन, कार्बन नैनोट्यूब्स, धातु ऑक्साइड नैनोकण तथा क्वांटम डॉट्स को पॉलिमर के साथ संयोजित कर उनकी दक्षता बढ़ाई जाएगी। यह शोध नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों में नई संभावनाएँ खोलेगा।

कुलपति प्रो. कविता शाह ने इसे विश्वविद्यालय के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि बताया तथा विज्ञान संकाय की संकायाध्यक्ष प्रो. प्रकृति राय, विभागाध्यक्ष डॉ. लक्ष्मण सिंह एवं अन्य शिक्षकों ने डॉ. श्रीवास्तव को बधाई दी।

तीन दिवसीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर एवं जेनेक्स, सिद्धार्थनगर के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन 29 से 31 अगस्त 2025 तक किया गया।

प्रतियोगिता का शुभारंभ 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर हुआ। इस अवसर पर कुलसचिव दीनानाथ यादव ने कहा कि खेल केवल शारीरिक क्षमता का ही विकास नहीं करते, बल्कि अनुशासन, धैर्य और टीम भावना का भी संचार करते हैं। क्रीड़ा समिति परिसर के संयोजक डॉ. विशाल गुप्ता ने कहा कि खेल विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण का माध्यम हैं और यह राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

पहले दिन कार्यक्रम की शुरुआत योगाभ्यास से हुई। इसके बाद मैराथन दौड़ व एथलेटिक्स प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। क्रिकेट प्रतियोगिता में प्रबंधन शास्त्र विभाग एवं कला संकाय की टीमों ने जीत दर्ज की।

मनोवैज्ञानिक परामर्श प्रकोष्ठ द्वारा व्याख्यान आयोजित

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. कविता शाह की प्रेरणा से मनोवैज्ञानिक परामर्श प्रकोष्ठ के तत्वावधान में 30 अगस्त 2025 को 'व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक जीवन में समग्र स्वास्थ्य और वित्तीय कल्याण' विषय पर आमंत्रित व्याख्यान आयोजित हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता छात्रकल्याण संकायाध्यक्ष एवं कला संकाय की अधिष्ठाता प्रो. नीता यादव ने की। मुख्य वक्ता प्रो. संदीप कुमार (मनोविज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) ने कहा कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक संतुलन के बिना जीवन अधूरा है। उन्होंने सयमित जीवन, आत्म–अनुशासन और सकारात्मक सोच पर बल दिया।

विशिष्ट वक्ता श्री प्रदीप कुमार त्रिपाठी (चीफ एडवाइजर, मनी केयर ऑनलाइन) ने वित्तीय कल्याण पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सही वित्तीय योजना, बचत और निवेश से व्यक्ति को आर्थिक सुरक्षा के साथ मानसिक शांति भी प्राप्त होती है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन सुश्री रोशनी ने दिया। स्वागत एवं अतिथि परिचय कु. शिवांगी त्रिपाठी (एम.ए., मनोविज्ञान) ने प्रस्तुत किया। मनोवैज्ञानिक परामर्श प्रकोष्ठ के सदस्य डॉ. मुन्नू खान ने प्रकोष्ठ की गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम में प्रो. हरीश कुमार शर्मा, प्रो. सौरभ, प्रो. एस. के. श्रीवास्तव, प्रो. सत्येंद्र दुबे सहित बड़ी संख्या में शिक्षक एवं छात्र–छात्रा उपस्थित रहे।